डॉ जीतेंद्र कुमार होता

सहायक प्राध्यापक (भूगोल)

भूगोल विभाग, दुर्गा महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़)

3. छत्तीसगढ़ में पर्यटन का उद्देश्य, महत्व

किसी भी क्षेत्र का भ्रमण या यात्रा करना जिसमें स्वास्थ्य शिक्षा, मनोरंजन, व्यापार, बेरोजगार के लालसा से एक स्थान से दूसरे स्थान जाना की पर्यटन कहलाता है। यह अस्थाई एवं पारिश्रमिक अर्जित करना नहीं पर्यटन शब्द को अंग्रेजी भाषा के टूरिज्म शब्द का संबंध टूर लेटिन भाषा के शब्द से किया हुआ है। शब्दकोश में 1953 मैं प्रकाशित हुआ। टूर एक हिबू शब्द है, इसका अर्थ खोज है। टूर का अर्थ यात्री द्वारा नए स्थान जाकर खोजना है । पर्यटन शब्द का उपयोग 1643 मैं भ्रमण, यात्रा करने वालों के लिए किया गया, भारत में 1970 के दशक में पर्यटन संबंधी आंकड़े एकत्र किया गया 1971 में पर्यटन शब्द को परिभाषित किया गया। पर्यटन एक ऐसी यात्रा या भ्रमण है जो मनोरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्य से किया जाता है। अतिथि देवो भवः भारतीय परंपरा प्राचीन काल से रही है। छत्तीसगढ़ में लगभग 138 स्थलों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के आधार पर पर्यटन स्थल के रूप में प्राथमिकता दी गई है, जिसमें 58 स्मारकों को 11 अभ्यारण 03 राष्ट्रीय उद्यान को संरक्षित घोषित किया गया है । पर्यटन मानव की प्राचीन एवं मौलिक प्रवृत्ति है। पर्यटन धरातलीय तथा मानवीय विभिन्नताओं विविधताओं का अवलोकन कर ज्ञान की बढ़ोतरी एवं मनोरंजन करता है। हम 27 सितंबर को विश्व पर्यटन दिवस के रूप में मनाते हैं।

पर्यटन का उद्देश्य

पर्यटन का प्रमुख उद्देश्य जनता में प्राकृतिक संरक्षण की भावना को प्रसारित करने के साथ साथ वन्य प्राणी प्रबंधन कार्यवृत्त के विभिन्न पहलुओं से पर्यटकों को परिचित कराना है। साथ ही परिवेश को बिना नुकसान पहुंचाए स्थानीय लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराना है। पारिस्थितिकी पर्यटन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

1. राज्य के आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पारिस्थितिकी दृष्टि से संवहनीय पर्यटन को प्रोत्साहित करना।
2. छत्तीसगढ़ में पर्यटन, अनुभव की गुणवत्ता एवं आकर्षण को सुदृढ़ करना।

3. छत्तीसगढ़ की समृद्ध एवं विविध सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार करना, आर्थिक विकास एवं संबन्धित क्षेत्रों में पर्यटन के योगदान में वृद्धि करना।

4. पर्यटन संबन्धित अधोसंरचना के विकास में निजी निवेशकों के प्रयत्नों को प्रोत्साहित करना।

5. शासन की भूमिका को सुविधापरक बनाना।

6. पर्यटन के क्षेत्र में नई अवधारणाएं जैसे– टाइम शेयर, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन, इत्यादि को बढ़ावा देना।

7. स्थानीय समुदाय की बौद्धिक सम्पदा एवं अधिकारों का सम्मान करना।

8. छत्तीसगढ़ में पर्यटन को उद्योग का दर्जा देना जिससे बेरोजगारों को रोजगार मिलने की संम्भावना होगी।

पर्यटन विकास के स्रोत –

छत्तीसगढ़ के पुरातात्विक धरोहरों, राष्ट्रीय उद्यानों एव अभ्यारण्यों को पर्यटन के रुप में विकासित की असीम संभावना है। जिनमें निम्नलिखित स्रोतों को विकसित कर पर्यटन को विकसित किया जा सकता है :

1. वन क्षेत्र का विस्तार – राष्ट्रीय उद्यानों एव अभ्यारण्यों की कुल भौगोलिक क्षेत्रफल पर वृक्षारोपण कर वन के घटते दर को कम किया जाना है।

2. जल स्रोतो का विकास – ऐसे क्षेत्र जहां जैविक दबाव कम हो चुका हो जल स्रोत विकास के समय यह सुनिश्चित किया जाए कि ग्रीष्म ऋतु में जब पानी की सर्वाधिक कमी होती है, तब भी वन्यप्राणियों को पानी मिल सके इसके लिए यह आवश्यक है कि स्थल का चयन सावधानीपूर्वक किया जाए। वहां तालाब, स्टाप डैम की व्यवस्था की जाए।

3. वन्य जीवों का प्रबंध एवं संरक्षण– छत्तीसगढ़ के वन्यजीवों की संख्या में कमी हो रही है। जिससे पारिस्थितिकी पर्यटन को विकसित करने के लिए वन्य जीवों की संख्या को संतुलित करने में राज्य एवं केन्द्र सरकार के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

4. **वन सीमाए–** वन सीमा से लगे 5 कि.मी. की परिधि मे बसे ग्रामवासियों के सक्रिय सहयोग से ही पारिस्थितिकी विकास कार्य होगा ।

5. वन सीमा जनभागीदारी– वन क्षेत्रों एवं वन्य प्राणियों को सुरक्षित तथा विकसित करने में जनभागीदारी (संयुक्त वन प्रबंध समिति) का सहयोग आवश्यक है।

6. संचार साधनों की व्यवस्था – पर्यटन क्षेत्र में पर्यटकों को पहुंचनें के लिए दूरसंचार– वायरलेस, मोबाइल, फोन, इंटरनेट पर जानकारी की सुविधा देना आवश्यक है।

7. दर्शनीय स्थल का विकास– राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभ्यारण्यों के आसपास स्थित दर्शनीय स्थल को प्रमुख रूप से प्राकृतिक विरासत के रूप में संरक्षित कर विकसित किया जा रहा है। जिससे पर्यटकों का आर्कषक केन्द्र बने।

पारिस्थितिकी पर्यटन का महत्व– पर्यटन एक ऐसी कड़ी या क्रिया है, जो मानव को प्रकृति संस्कृति से जोड़ कर रखती है एवं वैज्ञानिक पद्धति से ज्ञाना वर्धन, वातावरण

परिवर्तन, आमोद–प्रमोद और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किए जाते हैं। जब व्यक्ति पर्यटन स्थल पहुंचता है, नवीन स्फूर्ति का संचार होता है, नए–नए सोच विचार आते हैं, मौज मस्ती एवं आनंद की अनुभूति होती है, कुछ समय, दिन, घंटों के लिए तनाव, डिप्रेशन, बीमारी को भूल जाता है, इस आधार पर पर्यटन का महत्व निम्नलिखित है

1. पर्यटन मानव को यथार्थ एवं वस्तु पर ज्ञान बढ़ाता है, वास्तविकता से परिचय कराता है।
2. मानव को वर्तमान में अनेक समस्याएं एवं बीमारियों से निजात दिलाता है।
3. पर्यावरण एवं संरक्षण के प्रति जागरूकता लाता है।
4. पर्यटन स्थानीय लोगों को रोजगार देता है एवं आय के स्रोत बढ़ाते हैं तथा राज्य व देश का विकास होता है।
5. पर्यटन स्थलों का रखरखाव सुरक्षा में सरकार का ध्यान आकर्षित होता है ।
6. मानव एवं पर्यावरण के अंतर्संबंध को समझने में मदद मिलता है ।
7. प्राकृतिक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थलों को ढूंढ कर मानव हेतु प्रयुक्त करना।

पर्यटन के प्रमुख अंग या कारक निम्न है– आवास, खानपान, परिवहन, सड़क, रेल मार्ग, जलमार्ग, वायु मार्ग पर्यटन के आकर्षण बाजार सुविधाएं एवं गाइड है, इसके अतिरिक्त प्राकृतिक स्रोत, उच्च संरचना, खरीदारी केंद्र, प्रकाशन माध्यम वित्तीय स्रोत प्रमुख है।